J.B. COLLEGE, JORHAT

(AUTONOMOUS)

जे. बी. कॉलेज, जोरहाट

(स्वायत्त)

DEPARTMENT OF HINDI

हिन्दी विभाग

UNDERGRADUATE PROGRAMME

B.A honors (Hindi)

This syllabus (based on CBCS syllabus) is prepared by the Faculty concerned to the Board of Study (Hindi).The same has been approved by the Board of Study (Hindi) on 06.4.2018 and forwarded to Academic Council, J.B. College for final approval. Any query may kindly be addressed to the concerned Faculty.

On behalf of Board of Stud□□□ (Hindi)

Name of the Programme : B.A Honours Hindi

Programme Outcomes

हिन्दी से सम्बन्धित प्रतिष्ठा पाठ्यक्रमों में हमारे देश के विश्वविद्यालयों में एकरूपता देखने को नहीं मिलती है। जिसके कारण कुछेक क्षेत्रों के विद्यार्थी प्रभावित नजर आते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक पाठ्यक्रम बनाया है जिसका नाम है चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम। जो आयोग के क्रेडिट सिस्टम फार्मूले पर आधारित है। हमारा महाविद्यालय एक स्वायत्त महाविद्यालय है। एकेडेमिक काउंसिल ने इस बदलाव को ध्यान में रखते हुए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम पर आधारित आयोग के पाठ्यक्रम को सत्र 2016-17 से लागू करने का फैसला किया है। हिन्दी विषय के लिए गठित अध्ययन बोर्ड की बैठक में कुछ बदलावों के साथ हिन्दी (प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम को ग्रहण किया गया है जिनमें कोर कोर्स के कुल 14 प्रश्न-पत्र और विषय पर आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम के 4 प्रश्न-पत्र हैं जिनसे हिन्दी साहित्य और भाषा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। जो छात्रों को प्रभावी ढ़ंग से वृत्तिमुखी होने में सहायता करती है।

CBCS Progrmme

Course Structure- Hindi Honours

Semester	Course No	Course Code	Course Title	Course Type	Marks Distribution			Remark
	C-01	HINC101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक) History of Hindi Literature(upto riti kaal)	Theory	TH	TH-IA	Total	
1st	C-02	HINC102	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) /History of Hindi Literature (modern period)	Theory	80	20	100	
	C-03	HINC201	आदिकालीन और मध्यकालीन हिन्दी कविता / Ancient and Medieval Hindi Poetry	Theory	80	20	100	
2nd	C- 04	HINC202	आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक) /Modern Hindi poetry	Theory	80	20	100	
	C- 05	HINC301	छायावादोत्तर हिन्दी कविता /Postliberation Hindi Poetry	Theory	80	20	100	
	C- 06	HINC302	भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना/ Indian Poetics and i Criticism in Hindi	Theory	80	20	100	
3rd	C- 07	HINC303	पाश्चात्य काव्यशास्त्र /Western Poetics	Theory	80	20	100	
	SEC-01	**HINS301**	भाषा - कौशल**/ Skill of Language**		40	10	50	
	C- 08	HINC401	भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा/ Language studies &Hindi Language	Theory	80	20	100	
	C- 09	HINC402	हिन्दी उपन्यास/ Hindi Novel	Theory	80	20	100	
	C- 10	HINC403	हिन्दी कहानी/ Hindi Story	Theory	80	20	100	
4th	SEC-02	**HINS401**	अनुवादकौशल **/ Skill of translation**		40	10	50	
	C- 11	HINC501	हिन्दी नाटक और एकांकी/ Hindi Drama and one act Play	Theory	80	20	100	
	C- 12	HINC502	हिन्दी निबन्ध और अन्य गद्य विधाएँ/ Hindi Essays and other Prose Varieties	Theory	80	20	100	
	DSE-01	HIND501	असमिया भाषा और साहित्य/ Assamese Language and Literature	Theory	80	20	100	
5th	DSE-02	HIND502	प्रयोजनमूलक हिन्दी/ Functional Hindi	Theory	80	20	100	
	C- 13	HINC601	हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता/ Literary Journalism in HIndi/	Theory	80	20	100	
	C- 14	HINC602	प्रयोजनमूलक हिन्दी/ Functional Hindi	Theory	80	20	100	
	DSE-03	HIND601	तुलसीदास/ Tulsidas	Theory	80	20	100	
6th	DSE-04	HIND602	प्रेमचंद/ Premchand	Theory	80	20	100	
Generic Elective								

1st	GE	HING101	हिन्दी साहित्य का इतिहास/ History of Hindi Literature	Theory	80	20	100	
2nd	GE	HING201	गद्य साहित्य/ Literature in Prose	Theory	80	20	100	
3rd	GE-03	HING301	हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र/ Hindi Poetry and Poetics	Theory	80	20	100	
4th	GE-04	HING401	प्रयोजनमूलक हिन्दी/ Functional Hindi	Theory	80	20	100	

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-I

COURSE TITLE: हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)

COURSE CODE: HINC-101 **COURSE NO: C- 03**

CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**

Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य के क्रमिक विकास द्वारा हमें हमारी मध्यकालीन सांस्कृतिक विरासत की दिशा , दशा और साहित्यिक गतिविधियों का पता चलता है; जिसे तीन कालखण्डों में बाँटकर अध्ययन की व्यवस्था की गई है। हिन्दी की साहित्यिक गतिविधियों की विकास-यात्रा में विभिन्न पड़ावों को जाने बिना उसका मूल्यांकन संभव नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाया गया है ; ताकि छात्रों को हिन्दी की सही दिशा, दशा का पता चल सके। वे उसका लाभ उठाते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें।

इकाई- I आदिकाल कक्षाएँ - 15; अंक- 20

हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा; काल-विभाजन और नामकरण

आदिकालः सामान्य परिचय ,सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य के सामान्य परिचय

इकाई- II पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) का निर्गुण काव्य कक्षाएँ - 15; अंक- 20

सामान्य परिचय, संत काव्य और सूफी-काव्य तथा इनके प्रमुख कवियों (कबीर दास और जायसी) का साहित्यिक परिचय व इनकी विशेषताएँ

इकाई-III पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) का सगुण काव्य कक्षाएँ - 15; अंक- 20

सामान्य परिचय, वैष्णव भक्ति का उदय एवं विकास, श्री सम्प्रदाय और वल्लभ सम्प्रदाय का परिचय; रामभक्ति काव्य और कृष्णभक्ति काव्य का सामान्य परिचय और इनकी विशेषताएँ

इकाई-IV उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कक्षाएँ - 15; अंक- 20

सामान्य परिचय और इनकी विभिन्न काव्यधाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त)

सन्दर्भ ग्रंथ-

1.हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द शुक्ल

2.हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. पूरनचन्द टण्डन, विनीता कुमारी,जगतराम एंड संस, नई दिल्ली

3.हिन्दी साहित्य का इतिहास- सं. नगेन्द्र-हरदयाल

4.हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-II

COURSE TITLE: हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

COURSE CODE: HINC-102 **COURSE NO: C- 03**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप कई सामाजिक और ढाँचागत परिवर्तन देखने को मिले जि नसे साहित्य की दिशा बदली। इस काल में हिन्दी साहित्य में कई नई विधाओं का जन्म हुआ। विशेष रूप से गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास इस काल की महत्त्वपूर्ण देन है। जिसने एक नये मूल्य-बोध को जन्म दिया, जिसकी उपादेयता आज भी है। परिवर्तन का नित्यत्व एक नई दिशा की ओर इशारा करती है। छात्र उससे प्रभावित हुए बगैर नहीं रह पाते। इस बात को ध्यान में रखते हुए इसे पाठ्यक्रम में जगह दिया गया है।

इकाई- I कक्षाएँ - 15; अंक- 20

सामान्य परिचय; परिस्थितियाँ- राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक नवजागरणः सामान्य परिचय

इकाई- II कक्षाएँ - 15; अंक- 20

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद

इकाई- III कक्षाएँ - 15; अंक- 20

प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता एवं अन्य समकालीन कविताओं का सामान्य परिचय

इकाई- IV कक्षाएँ - 15; अंक- 20

हिन्दी गद्य का विकास- स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनोत्तर (उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध का सामान्य परिचय)

संदर्भ ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय
3. हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास- सं. नगेद्र-हरदयाल
5. हिन्दी सहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-II

COURSE TITLE: आदिकालीन और मध्यकालीन हिन्दी कविता
COURSE CODE: HINC-201 **COURSE NO: C- 03**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100END SEMESTER: 80 **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य की एक अविच्छिन्न धारा आदिकाल से प्रवाहित होती रही है जिस पर तदयुगीन परिस्थितियों का प्रभाव देखा जा सकता है। कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से उसे दर्शाने का प्रयास किया। अतः उनकी रचनाओं को जाने बगैर उस युग का मूल्यांकन संभव नहीं। अतः इस काल के प्रमुख कविओं की कविताओं के निर्धारित पदों का सम्यक् अध्ययन इस पत्र का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

पाठ्यपुस्तक- **'प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी काव्य' सं. प्रो. पूरनचन्द टण्डन; प्रकाशक- राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6**

इकाई- I विद्यापति की पदावली कक्षाएँ -15; अंक- 20

पाठ्यांश- भक्ति-सम्बन्धी पदः 1, 2, 3

श्रृंगार-सम्बन्धी पदः 13,18, 25

इकाई-II कक्षाएँ -20; अंक- 25

सूरदास का काव्य पाठ्यांश- भ्रमरगीत पद-संख्या: 1- 5

गोकुल लीला पद-संख्या: 1- 5

तुलसीदास का काव्य पाठ्यांश- विनयपत्रिका- पद-संख्या- 1- 5

दोहावली- 1-5

इकाई-III कबीर की कविता कक्षाएँ -15; अंक- 20

पाठ्यांश- दोहा-संख्याः-1-10

जायसी का काव्य-पद्मावत नागमती वियोग खण्ड (केवल बारहमासा)

इकाई-IV कक्षाएँ -10; अंक- 15

बिहारी –

पाठ्यांश- भक्तिपरक दोहे- 26-35

पाठ्यांश- नीतिपरक दोहे- 38-47

घनानन्द-

पाठ्यांश- घनानन्द की कविता- 1-5

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. विद्यापतिः अनुशीलन एवं मूल्यांकन- डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव
2. जायसी- विजयदेव नारायण साही

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-II

COURSE TITLE: आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)
COURSE CODE: HINC-202 **COURSE NO: C- 03**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रारम्भ 1850 ई० से माना जाता है जिसका मूल कारण पाश्चात्य प्रभाव रहा। साथ ही, पाश्चात्य संसाधनों से रुबरू होने के कारण हमारी सोच में परिवर्तन होने लगा। राष्ट्रीयता के बीज अंकुरित हुए। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हिन्दी काव्य पर भी पड़ा। अतः प्रस्तुत पत्र में इस काल के प्रमुख कवियों के निर्धारित कविताओं का सम्यक् अनुशीलन ही उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक- आधुनिक काव्य संग्रह, सं. डॉ. रामवीर सिंह, वि. वि. प्रकाशन, वाराणसी

इकाई- I कक्षाएँ -15; अंक- 20

भारतेन्दु का काव्य- पाठ्यांश- हिन्दी भाषा- 1-10
हरिऔध का काव्य-पाठ्यांशः प्रियप्रवास- 31, 35

इकाई-II कक्षाएँ -15; अंक- 20

मैथिलीशरण गुप्त का काव्य पाठ्यांशः कैकेयी अनुताप, उर्मिला
यशोधरा- (1) सखि, वे मुझसे कहकर जाते
रामनरेश त्रिपाठी का काव्य पाठ्यांश- पथिक ('काव्य सुषमा' से)

इकाई-III कक्षाएँ -15; अंक- 20

जयशंकर प्रसाद का काव्य- पाठ्यांश- कामायनी- श्रद्धा सर्ग
निराला का काव्य- पाठ्यांश- जूही की कली, सन्ध्या सुन्दरी, बाँधो न नाव, भिक्षुक, विधवा

इकाई-IV कक्षाएँ -15; अंक- 20

सुमित्रानन्दन पंत का काव्य- पाठ्यांश- ताज, भारत माता, नौका विहार, दूत झरो, प्रथम रश्मि
महादेवी वर्मा का काव्य-पाठ्यांश- मैं नीर भरी दुख की बदली, यह मन्दिर दीप नीरव जलने दो, रे पपीहे पी कहाँ|

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-III

COURSE TITLE: छायावादोत्तर हिन्दी कविता
COURSE CODE: HINC301 **COURSE NO: C- 05**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

छायावादोत्तर काल में हर क्षेत्र में बदलाव देखा गया। साहित्यिक दृष्टि से दे खें तो जितना परिवर्तन पिछले सौ वर्षों में नहीं हुआ था उतना 50 वर्षों में देखने को मिला। इस काल में आजादी की छटपटाहट देखने को मिली। पर स्वाधीनता के बाद स्वाधीनता की अपेक्षाओं में ह्रास देखने को मिला जिसने केवल बुद्धिजीवी वर्ग को ही नहीं आम आदमी को भी झकझोर कर रख दिया। जिसके कारण स्वाधीनोत्तर कविताओं में विद्रोही स्वर देखने को मिलता है। अतः प्रस्तुत पत्र में प्रमुख कवियों के निर्धारित कविताओं का सम्यक् अनुशीलन ही उद्देश्य रहा है।

पाठ्यपुस्तक- आधुनिक काव्य संग्रह, सं. डॉ. रामवीर सिंह, वि. वि. प्रकाशन, वाराणसी

इकाई-I

कक्षाएँ-15; अंक -20

केदारनाथ अग्रवाल – खेत का दृश्य, पक्षी दिन नागार्जुन - कालिदास, बादल को घिरते देखा है

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20

रामधारी सिंह 'दिनकर' – प्रभाती, बुद्धदेव
माखनलाल चतुर्वेदी - कैदी और कोकिला, पुष्प की अभिलाषा

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' – यह दीप अकेला, साँप के प्रति
गिरिजा कुमार माथुर - कुआर की दोपहरी, पन्द्रह अगस्त

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20

भवानी प्रसाद मिश्र - गीत फरोस, लुहार- से
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- सूखे पीले पत्ते ने कहा, विवशता

संदर्भ ग्रंथ-

1. प्रगतिशील काव्यधारा और केदार नाथ अग्रवाल – रामविलास शर्मा; हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली
2. नई कविता और अस्तित्ववाद

3. कविता का यथार्थवाद- परमानन्द श्रीवास्तव

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-III

COURSE TITLE: भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना
COURSE CODE: HINC302 **COURSE NO: C- 06**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

भारतीय काव्यशास्त्रीय चिंतन का क्षेत्र बहुत व्यापक रहा है। हमारी साहित्यिक अस्मिता और चिन्तन किस प्रकार विज्ञानसम्मत और ऊर्जावान था। हमारा काव्यशास्त्रीय चिन्तन और परम्परा केवल संस्कृत ही नहीं हिन्दी में भी कितनी व्यापक थी। उसके बारे में जानने का अवसर यह पत्र प्रदान करता है। जो भाषायी संरचना को समझने और संवरने का अवसर प्रदान करता है। जिससे छात्रों की समीक्षात्मक शक्ति में वृद्धि होगी।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक -20

काव्यलक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य-गुण एवं शब्दशक्ति

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20

निम्नलिखित संप्रदायों का सामान्य परिचय दीजिए – रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, औचित्य

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक - 20

छन्द: स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार
निम्नलिखित छंदों का सोदाहरण परिचय – मन्द्राकांता, कवित्त, सवैया, दोहा, रोला, सोरठा,
द्रूतविलम्बित, राधिका, मालिनी, चौपाई
अलंकार: स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार
निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय – अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा.असंगति,
विभावना, निदर्शना, अतिशयोक्ति

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20

हिन्दी आलोचना का इतिहासः उद्भव और विकास
हिन्दी आलोचना के प्रमुख आलोचक- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह

संदर्भ ग्रंथः-

1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्रा
2. काव्य के तत्व - आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा

3. भारतीय, पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना- रामचन्द्र तिवारी; वि. वि. प्रकाशन, वाराणसी
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डा. अर्चना श्रीवास्तव
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद
6. अलंकार मुक्तावली- देवेन्द्रनाथ शर्मा

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-III
COURSE TITLE: पाश्चात्य काव्यशास्त्र
COURSE CODE: HINC303 **CREDITS: 07**
NO. OF CLASSES: 60
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य पर तकनीकी रूप से पाश्चात्य काव्यशास्त्र का प्रभाव बड़े पैमाने पर देखा जाता है जिसके तकनीकी पक्ष को जाने बगैर समकालीन साहित्य का मूल्यांकन अधूरा-सा लगता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय परंपरा और उसके मूलभूत समीक्षात्मक पद्धतियों को जानना जरूरी है। इस पत्र में उनकी विश्लेषण पद्धति, समीक्षा, वाद आदि को इस पत्र में स्थान दिया गया है। उपयुक्त विषयों की जानकारी देना ही इस पत्र का उद्देश्य रहा है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक -20

प्लेटो - काव्य संबंधी मान्यताएँ
अरस्तू - काव्य सिद्धांत
लोंजाइनस – काव्य में उदात्त अवधारणा

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20

वर्डस्वर्थ- काव्य भाषा का सिद्धान्त
क्रोचे – अभिव्यंजनावाद
कॉलरिज- कल्पना और फैन्टेसी।

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20

टी. एस. इलियट - निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत
आइ. ए. रिचडर्स - मूल्य सिद्धांत, संप्रेषण सिद्धान्त

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20

मार्क्सवादी समीक्षा, स्वछंदतावाद, यथार्थवाद, शैली विज्ञान

संदर्भ ग्रंथः-

1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र
2. काव्य के तत्व - आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – नगेन्द्र; नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली

4. रीति सिद्धान्त और शैली विज्ञान – सूर्यकान्त त्रिपाठी; अमन प्रकाशन
5. शैली विज्ञान और शैली विश्लेषण- पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-IV

COURSE TITLE: भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा
COURSE CODE: HINC401 **COURSE NO: C- 08**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

किसी भी साहित्य की संरचना में भाषा की बारीकियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो जितना ही जिस भाषा की संरचना को अच्छी तरह जानता है वह उतने ही अच्छे तरीके से साहित्य के मर्म को समझ पाता है। विशेष कर अनुवाद की गुणवत्ता को बनाये रखने में भाषायी संरचना को जानना बहुत आवश्यक होता है। भाषा विज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जिसमें भाषा की उत्पति , स्वरूप, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से भाषा की प्रकृति के साथ-साथ मानव जीवन में भाषा की महत्ता को जानने का अवसर मिलेगा। साथ ही, इसके सैद्धान्तिक पक्ष , भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक विकास, लिपि के उद्भव और विकास, देवनागरी लिपि की जानकारी देना भी इस पत्र का उद्देश्य रहा है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक -20

भाषा और भाषा विज्ञानः परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार भाषा विज्ञान का अन्य शास्त्रों से संबंध

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20

स्वनिम विज्ञान- स्वरूप, परिभाषा और प्रकार (शाखा), वागेन्द्रियों और स्वनों का वर्गीकरण
रूपिम विज्ञान- स्वरूप, परिभाषा और प्रकार
पद विभाग- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20

वाक्य विज्ञान – स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार
अर्थ विज्ञान - स्वरूप, परिभाषा एवं अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20

हिन्दी भाषाः उद्भव एवं विकास
हिन्दी बोलियों का वर्गीकरण
देवनागरी लिपि का विकास-क्रम एवं मानक

संदर्भ ग्रंथः-

1. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी भाषा – भोलानाथ तिवारी
3. हिन्दी भाषा का इतिहास- डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
4. हिन्दी भाषाः उद्भव और विकास – हरदेव बाहरी

5. हिन्दी भाषा की लिपि संरचना - भोलानाथ तिवारी
6. नागरी लिपिः उद्भव और विकास – ओम प्रकाश झारिया; वाणी प्रकाशन

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-IV
COURSE TITLE: हिन्दी उपन्यास
COURSE CODE: HINC402 **COURSE NO: C- 09**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

गद्य विधाओं, विशेषकर कथा साहित्य में उपन्यास साहित्य की एक विशेष भूमिका रही है। उपन्यास साहित्य के विकास के विभिन्न कालखण्डों में रचित उपन्यासों के माध्यम से हमें उसकी दिशा और दशा का परिचय मिलता है। इसी को ध्यान में रखकर इस पत्र में निम्न उपन्यासों को स्थान दिया गया है। ताकि समय सापेक्ष परिवेश की जानकारी प्राप्त किया जा सके ।

इकाई-I कक्षाएँ-15 अंक -20

प्रेमचन्द का उपन्यास साहित्य व 'गबन' (संक्षिप्त) उपन्यास

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20

जैनेन्द्र कुमार का उपन्यास साहित्य व 'त्यागपत्र' उपन्यास

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20

मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य व 'महाभोज' उपन्यास

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20

अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य व 'मानस का हंस' (संक्षिप्त) उपन्यास

संदर्भ ग्रंथः-

1. उपन्यास साहित्य का इतिहास – डॉ. गुलाब राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी उपन्यास का विकास – डॉ. मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास – 2 खण्ड – डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास – डॉ. इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास 2 खण्ड – डॉ. चमन लाल, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-IV
COURSE TITLE: हिन्दी कहानी
COURSE CODE: HINC-403 **COURSE NO: C- 10**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी कथा साहित्य की दूसरी महत्वपूर्ण विधा कहानी है। जिसका अध्ययन किए बिना कथा साहित्य अधूरा लगता है। कहानी कम समय, कम घटना और कम पात्रों के माध्यम से बहुत कुछ कह जाता है। जो हमारी सोच को एक नया आकार प्रदान करता है । समयानुसार कहानी की कथावस्तु और रूपविधान में परिवर्तन होता रहा है और उससे कहानी की दिशा बदलती र ही है। इस पाठ्यक्रम में कहानी की विकास यात्रा की जानकारी इन कहानियों के माध्यम से जा ना सके। हि न्दी के प्रसिद्ध कहानीकारों की कहानियों से जीवन के तमाम महत्वपूर्ण बिन्दुओं की समझ हो सके। सन् साठ के बाद की कहानियों के बदले हुए तेवर की भी जानकारी मिल सके। इन्हीं सब को ध्यान में रख कर इन कहानियों को पाठ्यक्रम में जगह दिया गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक -20
उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'), पूस की रात (प्रेमचंद)

इकाई-II कक्षाएँ-15; अंक -20
हार की जीत (सुदर्शन), पाज़ेब (जैनेन्द्र कुमार)

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20
तीसरी कसम (फणीशवरनाथ 'रेणु'), मिस पाल (मोहन राकेश)

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक -20
परिन्दे (निर्मल वर्मा), दोपहर का भोजन (अमरकांत)

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>-

1. हिन्दी कहानी का इतिहास – डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. कहानी नई कहानी – डॉ. नामवर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद

5. हिन्दी कहानी की विकास प्रक्रिया – आनंद प्रकाश
6. एक दुनिया समानांतर – सं. राजेंद्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाश

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-IV

COURSE TITLE: हिन्दी नाटक और एकांकी

COURSE CODE: HINC-501 **COURSE NO: C- 11**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

गद्य विधाओं में नाटक साहित्य सर्वाधिक सशक्त एवं प्रभावशाली विधा है। हमारे यहाँ संस्कृत नाटकों की एक लम्बी परम्परा रही है। नाट्य साहित्य हमारी तार्किक क्षमता को बढ़ाता है। साथ ही, सटीक विषय प्रतिपादन और प्रत्युत्तर की क्षमता भी बढ़ाता है। जिसके कारण इसकी उपादेयता सर्वविदित है। भारतेन्दु युग के नाटकों में जहाँ लोक चेतना देखने को मिलती है वही रंगकर्म के विविध आयाम और समस्याओं की अभिव्यक्ति परवर्ती नाटकों में देखने को मिलती है। जिसे जानने का अवसर इस पत्र से मिलेगा। साथ ही, समय सापेक्ष एकांकी नाटकों की पहचान सन् 1920 के दशक में देखने को मिली जिसके माध्यम से सामाजिक समस्याओं को बड़े ही सहज रूप में जानने का अवसर यह पत्र प्रदान करता है।

इकाई-I कक्षाएँ -15; अंक -20

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक साहित्य व 'अंधेर नगरी' नाटक

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक -20

जयशंकर प्रसाद का नाटक साहित्य व 'स्कन्दगुप्त' नाटक

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक -20

मोहन राकेश का नाटक साहित्य व 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

पाठ्यपुस्तक- छोटे नाटक- सं. शुकदेव सिंह; अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

पाठ्य एकांकी-

1. औरंगजेब की आखिरी रात - राम कुमार वर्मा
2. विषकन्या - गोविनवल्लभ पंत
3. और वह जा न सकी – विष्णु प्रभाकर

संदर्भ ग्रंथ-

1.हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2.एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेंद्र

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-IV

COURSE TITLE: हिन्दी निबन्ध और अन्य गद्य विधाएँ

COURSE CODE: HINC-502 **COURSE NO: C- 12**

CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**

Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य में नि बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। निबंध हमारी वैचारिक क्षमता के विश्लेषण का रास्ता दिखलाता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में हिन्दी साहित्य के विभिन्न प्रकार के ऐसे चुनिंदा निबंधों को रखा गया है जिनसे विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन हो सके।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

सरदार पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - करुणा

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक-20

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - देवदारु

विद्यानिवास मिश्र - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

शिवपूजन सहाय - महाकवि जयशंकर प्रसाद

डॉ. नगेन्द्र - दादा स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

इकाई-IV कक्षाएँ -15; अंक-20

रामवृक्ष बेनीपुरी - रजिया

विष्णुकान्त शास्त्री - ये हैं प्रोफेसर शशांक

संदर्भ ग्रंथ-

1. हिन्दी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प – डॉ. गणेश खरे
2. हिन्दी निबंध और निबंधकार – डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. निबंध निकष – डॉ.पी. एन. झा, असम हिन्दी प्रकाशन, गुवाहाटी

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-VI

COURSE TITLE: हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता
COURSE CODE: HINC-601 **COURSE NO: C- 13**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

साहित्यिक पत्रकारिता का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसकी महत्ता को समझते हुए पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी है तथा समय की मांग के अनुसार हिन्दी साहित्य की सटीक आलोचना कर मार्गदर्शन किया है। पत्रकारिता का परिचय और प्रवृत्तियों से हमें समसामयिक सोच, विश्लेषण और मूल्य-बोध का परिचय मिलता है जो हमें एक अच्छे पत्रकार और पत्रकारिता के मूल्य को ही नहीं वरन् एक अच्छे पत्रकार को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और किस मोड़ पर अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है, के बारे में जानकारी देता है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

साहित्यिक पत्रकारिताः अर्थ, अवधारणा और महत्त्व
भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिताः परिचय और प्रवृत्तियाँ

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक-20

द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिताः परिचय और प्रवृत्तियाँ
प्रेमचन्द और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिताः परिचय और प्रवृत्तियाँ

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिताः परिचय और प्रवृत्तियाँ

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ - बनारस अखबार, भारत मित्र, हिन्दी प्रदीप

<u>संदर्भ ग्रंथ-</u>

1. हिन्दी पत्रकारिता – डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह
2. हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास – अर्जुन तिवारी
3. आधुनिक पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. पत्रकारिताः परिवेश और प्रवृत्तियाँ – पृथ्वीनाथ पाण्डेय; लोक भारती प्रकाशन, इलाहावाद

Detailed Syllabus for Core Course
B.A. (Honours) Hindi

SEMESTER-VI

COURSE TITLE: प्रयोजनमूलक हिन्दी
COURSE CODE: HINC-602 **COURSE NO: C- 14**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

साहित्य भाषा को प्रतिष्ठा दे सकता है लेकिन विस्तार नहीं। भाषा को विस्तार देता है उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप। प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी को वैश्विक प्रसार मिला है। हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी हिन्दी को समझने और बोलने वाले मिल जाते हैं। हिन्दी का विकास आज राजकीय माध्यमों के द्वारा नहीं बल्कि दूसरे माध्यमों से हो रहा है, जिनमें चलचित्र, दूरदर्शन उद्योग और व्यापार का योगदान अधिक है। आज हिन्दी के प्रयोजनमूलक संदर्भों से जो क्षेत्र जुड़े हुए हैं उसका ज्ञान अर्जित करने हेतु प्रयोजनपरक हिन्दी को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रयोजनमूलक हिन्दी: अवधारणा, स्वरूप, विशेषताएँ, सीमाएँ एवं उपयोगिता
हिन्दी भाषा के विविध रूप: बोलचाल की हिन्दी, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा
हिन्दी की शैलियाँ: हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी
संविधान में हिन्दी

इकाई -II कक्षाएँ -15; अंक-20

हिन्दी के प्रयोग क्षेत्र : भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना एवं भाषा प्रयुक्ति के प्रकार- वार्त्ता क्षेत्र, वार्त्ता शैली एवं वार्त्ता प्रकार

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार: कार्यालयी हिन्दी, व्यावसायिक हिन्दी

इकाई-IV कक्षाएँ -15; अंक-20

पत्रः स्वरूप, प्रकार एवं प्रयोग
व्यावसायिक पत्राचारः स्वरूप एवं प्रयोग
पत्र-लेखन व्यवहार: टिप्पणी तथा मसौदा-लेखन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>-

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी - दंगल झाल्टे
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका- कैलाशनाथ पाण्डेय; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव

5. प्रसाशनिक हिन्दी - पूरनचन्द टण्डन
6. प्रसाशनिक हिन्दी - कैलाशचन्द्र भाटिया

Detailed Syllabus for □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□
Sub: Hindi

SEMESTER-V
COURSE TITLE: असमीया भाषा और साहित्य
COURSE CODE: HIND-501 **COURSE NO: DSE-01**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 END SEMESTER: 80 INTERNAL ASSESSMENTS: 20

यह पत्र असमीया भाषा और साहित्य से संबंधित है। हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की दृष्टि से यह पत्र नया है। साहित्य चाहे जहाँ का भी हो; किन्तु साहित्यिक प्रवृत्तियाँ थोड़े-बहुत अंतर के बावजूद लगभग एक जैसी होती हैं। असमीया एक आधुनिक भारतीय आर्यभाषा है। इसके उद्भव और विकास की जानकारी आवश्यक है। साथ ही, साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी भी आवश्यक है। जिसे ध्यान में रखते हुए इस पत्र में असमीया साहित्य के इतिहास का एक सामान्य परिचय (आदियुग से रोमांटिक युग तक) दिया गया है। श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव की चर्चा के बिना असमीया साहित्य की कल्पना ही अधूरी है, इस बात को भी ध्यान में रखा गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

असमीया भाषा: उद्भव और विकास
वैष्णवयुग के कविद्वय शंकरदेव और माधवदेव का साहित्यिक और सामाजिक अवदान
पंचाली साहित्य का सामान्य परिचय

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक-20

पाठ्य वरगीत- शंकरदेव - नारायण काहे भगति करु तेरा, पावँ परि हरि करहुँ विनति, नारायन की गति करई
माधवदेव – अरे माई! तोहार तनय यदुमणि, केलि करे वृन्दावन में

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

रोमांटिक युग का स्वरूप एवं इस युग के प्रतिनिधि साहित्यकार(लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, चन्द्र कुमार आगरवाला और नलिनीबाला देवी)

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

ज्योतिप्रसाद अगरवाला: जीवनवृत्त
ज्योतिप्रसाद अगरवाला की निम्नलिखित कविताओं का अध्ययन-
पाठ्य गीत- विश्व विजयी नौजवान, मेरे भारत की, तेरे मेरे आलोक की यात्रा
पाठ्य कविताएँ- जनता का आह्वान, विश्वशिल्पी, मैं शिल्पी

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>-

1. असमीया साहित्य का इतिहास - चित्र महंत, असाम हिंदी प्रकाशन, माछखोआ, गुवाहाटी
2. असमीया साहित्य निकष – सं.- भूपेन रायचौधुरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

3. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका – इन्द्रनाथ चौधुरी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
4.असमीया साहित्य की रूपरेखा – सं.- उपेंद्रनाथ गोस्वामी, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी
5. असम के बरगीत – बापचन्द्र महन्त
6. असमीया साहित्य का परिचयात्मक इतिहास- डॉ. ए. एन. सहाय
7. ज्योति प्रभा- संचयन व अनुवाद—देवीप्रसाद वागड़ोदिया; प्रकाशक- मुरलीधर जालान फाउण्डेशन, जालाननगर,डिब्रुगढ़

Detailed Syllabus for □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□

Sub: Hindi

SEMESTER-V

COURSE TITLE: प्रयोजनमूलक हिन्दी

COURSE CODE: HIND-502 **COURSE NO: DSE-02**

CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**

Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

साहित्य भाषा को प्रतिष्ठा दे सकता है लेकिन विस्तार नहीं। भाषा को विस्तार देता है उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप। प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी को वैश्विक प्रसार मिला है। हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी हिन्दी को समझने और बोलने वाले मिल जाते हैं। हिन्दी का विकास आज राजकीय माध्यमों के द्वारा नहीं बल्कि दूसरे माध्यमों से हो रहा है, जिनमें चलचित्र, दूरदर्शन उद्योग और व्यापार का योगदान अधिक है। आज हिन्दी के प्रयोजनमूलक संदर्भों से जो क्षेत्र जुड़े हुए हैं उसका ज्ञान अर्जित करने हेतु प्रयोजनपरक हिन्दी को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

संचार माध्यम लेखन- 1:

विविध संचार माध्यम: परिचय एवं प्रकार
श्रव्य माध्यम लेखनः रेडियो
श्रव्य-दृष्य माध्यम लेखनः टेलिविजन और फिल्म
तकनीकी माध्यमः इंटरनेट

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक-20

संचार माध्यम लेखन- 2:

रेडियो-लेखन- समाचार, धारावाहिक, फीचर
रेडियो नाटक- अवयव, रूप और प्रविधि
इंटरनेटः सामग्री-सृजन, संयोजन एवं प्रेषण

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

अनुवाद का स्वरूप, परिभाषा, प्रकार प्रक्रिया एवं महत्त्व

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

पारिभाषिक शब्दावली: स्वरूप, परिभाषा, विशेषताएँ एवं निर्मान सिद्धान्त

संदर्भ ग्रंथ-

1. अनुवाद विज्ञान- भोलानाथ तिवारी

2. संचार माधयम लेखन- गौरीशंकर रैणा
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी – विनोद गोदरे

Detailed Syllabus for □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□

Sub: Hindi

SEMESTER-VI

COURSE TITLE: तुलसीदास

COURSE CODE: HIND-601 **COURSE NO: DSE-03**

CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**

Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम की विशेष भूमिका होती है। भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जाता है जिसमें तुलसीदास का विशेष स्थान है। जिसे जाने बगैर हिन्दी सहित्य का अध्ययन अधूरा है। उनकी अनमोल निधि के कुछ अंशों को इस पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। उनका साधारण व्यक्तित्व किस प्रकार लोकनायकत्व को चरितार्थ करता है। उसके बारे में इस पाठ्यक्रम से जानकारी मिलती है। उनका काव्य लोकमंगल का काव्य है। इसीलिए आज भी तुलसीदास की रचनाएँ प्रासंगिक हैं। जिसे जानना जरूरी है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

1. रामकाव्य धारा में तुलसी का स्थान
2. तुलसी का महाकाव्यत्व
3. तुलसी की भक्ति-पद्धति
4. तुलसी का समन्वयवाद
5. तुलसी की भाषा

इकाई –II कक्षाएँ-15; अंक-20

रामचरितमानस का उत्तरकाण्ड (वर्ण्य-विषय; भक्ति, ज्ञान और दर्शन)

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

विनय पत्रिका में तुलसी की भक्ति-भावना

पाठ्यपद- अब लौं नसानी, अब न नसैहों; राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे; खोटो खरो रावरो हौं; काहे को फिरत मूढ़ मन धायो; नाथ सों कौन बिनती करि सुनावौं

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

कवितावली

पाठ्यपद- अवधेस के द्वारे सकारें गई; पुरतें निकसी रघुबीर बधू; सीस जटा उर बाहु बिसाल; सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने;

गीतावली

पाठ्यपद-आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए; तू देखि देखि री!; ये उपही कोउ कुँवर अहेरी

संदर्भ ग्रंथ-

1. तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. तुलसीदास – सं. डॉ. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. तुलसीदास जीवनी और विचारधारा- डॉ. राजाराम रस्तोगी

4. तुलसी और उनका काव्य – डॉ. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. विनय पत्रिका : एक मूल्यांकन – डॉ. हरिचरण शर्मा
6. तुलसीदास – डॉ. वासुदेव सिंह – अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

Detailed Syllabus for □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□
Sub: Hindi

SEMESTER-VI
COURSE TITLE प्रेमचन्द
COURSE CODE: HIND-602 **COURSE NO: DSE-04**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी साहित्य में गद्य-लेखन का प्रारम्भ आदिकाल से माना जाता है। पर, साहित्यिक रूप से गद्य-लेखन का आरम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। लेकिन इस काल में भी गद्य का विकसित रूप निखर कर नहीं आ पाता। 20वीं सदी के आरम्भ में कथाकार प्रेमचन्द का उदय एक युगान्तकारी घटना थी, जिन्होंने अपने साहित्य से केवल हिन्दी-जगत को ही नहीं, पूरे भारतवर्ष को प्रकाशित किया। वे केवल कहानीकार और उपन्यासकार ही नहीं , नाटककार और निबंधकार भी थे। ऐसे साहित्यकार के बारे में जानना जरूरी हो जा ता है। इसे ध्यान में रखकर इस विशेष पत्र में प्रेमचन्द को स्थान दिया गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रेमचन्द का उपन्यास साहित्य व 'निर्मला' उपन्यास

इकाई –II कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रेमचन्द के निबन्ध व 'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक निबन्ध

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रेमचन्द का नाटक साहित्य व 'कर्बला' नाटक

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य व निर्धारित कहानियाँ- पंच परमेश्वर, सुजान भगत, कफ़न, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी

<u>संदर्भ ग्रंथ-</u>

1. प्रेमचंद – डॉ. रामविलास शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी का गद्य साहित्य- डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिन्दी कहानी का इतिहास - भाग 1, 2, 3, – डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. उपन्यास साहित्य का इतिहास – डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश – सुमित प्रकाशन, इलाहावाद

6. आधुनिक हिन्दी उपन्यास (दो खंड) – डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Detailed Syllabus for Generic Elective Courses
Sub : Hindi

SEMESTER-I

COURSE TITLE : हिन्दी साहित्य का इतिहास

COURSE CODE: HING-101 **COURSE NO: DSE-01**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

हिन्दी ऐच्छिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास का ज्ञान जरूरी है। ऐसे बहुत से विद्यार्थी हैं जो सामान्य ऐच्छिक हिन्दी पढ़कर स्नातकोत्तर कक्षाओं में नामांकन कराते हैं। साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा, काल विभाजन, नामकरण और विभिन्न कालखण्डों की साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी जब तक नहीं होगी तब तक विद्यार्थी का ज्ञान अधूरा माना जाएगा। यही कारण है कि इस तरह के पत्र को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई- I आदिकाल कक्षाएँ - 15 अंक- 20

हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा; काल-विभाजन और नामकरण; सामान्य परिचय, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित

इकाई- II पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) कक्षाएँ - 12 अंक- 16

निर्गुण–सगुण धाराः सामान्य परिचय, इनके कवियों- कबीर, जायसी, सूर और तुलसी का सामान्य परिचय

इकाई-III उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कक्षाएँ - 12 अंक-16

सामान्य परिचय रीतिकालीन काव्य की धाराएँ रीतिबद्ध काव्य; रीतिसिद्ध काव्य; रीतिमुक्त काव्य

इकाई-IV आधुनिक काल कक्षाएँ - 19 अंक- 28

सामान्य परिचय भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविता का सामान्य परिचय

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाब राय
2. हिन्दी साहित्य का सुगम इतिहास - हरेराम पाठक

3. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – विश्वनाथ तिवारी

Detailed Syllabus for Generic Elective Courses
Sub : Hindi

SEMESTER-II

COURSE TITLE : गद्य साहित्य
COURSE CODE: HING-201 **COURSE NO: DSE-02**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

संस्कृत साहित्य में गद्य -लेखन की सुदीर्घ परंपरा रही है , लेकिन हिन्दी में इसका आगमन बहुत बाद में हुआ । 19वीं शताब्दी के बाद हिन्दी में गद्य साहित्य की इतनी उन्नति हुई कि इस काल को गद्य काल की संज्ञा दे दी गई है। आधुनिक काल के पहले गद्य अविकसित भले ही रहा हो , लेकिन उसका अभाव नहीं रहा था। इसके विकास में भारतेन्दु युग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी गद्य का प्रौढ़तम रूप द्विवेदी युग के बाद दिखाई पड़ता है। गद्य के विभिन्न विधाओं की दृष्टि से भी यह युग वैविध्यपूर्ण दिखाई पड़ता है। इस पत्र में गद्य-साहित्य की समस्त विधाओं को नहीं , केवल उपन्यास, कहानी और निबंध को जगह दी गई है। इसे पढ़कर विद्यार्थी हिन्दी गद्य साहित्य की जानकारी को बढ़ा सकेंगे।

इकाई- I कक्षाएँ - 15 अंक- 20

पाठ्य उपन्यास - काली आँधी - कमलेश्वर

इकाई-II कक्षाएँ -15 अंक- 20

पाठ्यपुस्तक- **गद्य फुलवारी** संपादक मण्डल अध्यक्ष- शहाबुद्दीन शेख; प्र. राजपाल, दिल्ली

पाठ्य कहानी-

आँसुओं की होली - प्रेमचन्द
आतिथ्य - यशपाल
मवाली - मोहन राकेश
चीफ की दावत - भीष्म साहनी
अकेली - मन्नू भंडारी

इकाई-III कक्षाएँ -15 अंक- 20

पाठ्यपुस्तक- **गद्य फुलवारी**, संपादक मण्डल अध्यक्ष- शहाबुद्दीन शेख; प्र. राजपाल, दिल्ली

पाठ्यांश-

गप-शप (निबन्ध) – नामवर सिंह
मैं धोबी हूँ (निबन्ध) - शिवपूजन सहाय
सुभान खाँ (रेखाचित्र) - रामवृक्ष बेनीपुरी
सदाचार का तावीज़ (व्यंग्य) - हरिशंकर परसाई

महात्मा गाँधी (संस्मरण) - रामकुमार वर्मा

इकाई- IV कक्षाएँ - 15 अंक- 20

पाठ्य नाटक- ध्रुवस्वामिनी - जयशंकर प्रसाद

पाठ्यपुस्तक- **गद्य फुलवारी**, संपादक मण्डल अध्यक्ष- शहाबुद्दीन शेख; प्र. राजपाल, दिल्ली

आवाज़ का नीलाम (एकांकी) - धर्मवीर भ

Detailed Syllabus for Generic Elective Courses
Sub : Hindi

SEMESTER-III

COURSE TITLE : हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र
COURSE CODE: HING-301 **COURSE NO: DSE-03**
CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**
Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

इस पत्र में हिन्दी काव्य के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष को स्थान दिया गया है। ताकि छात्रों को हमारी काव्य परम्परा के विविध रूपों की जानकारी मिल सके। वे इसका लाभ उठाकर अपने को साहित्यिक रूप से संवारने में सहायक होंगे। इसी कारण विभिन्न कालखण्डों की कविताओं को इस पत्र में स्थान दिया गया है । जिससे हिन्दी परम्परा का आभास विद्यार्थियों को प्राप्त हो। साथ ही, काव्यशास्त्र के विभिन्न अगों एवं उपांगों की भी चर्चा की गयी है। इस पत्र का लक्ष्य छात्रों को हिन्दी काव्य परम्परा व काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय देना ही मात्र है।

पाठ्यपुस्तक- काव्य सुषमा, सं. सत्यकाम विद्यालंकार; प्रकाशक- नया साहित्य; कश्मीरी गेट, दिल्ली

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

कबीर के पद - 1, 2, 3

सूर के पद-1, 2, 3

तुलसी(कवितावली-से)- 2, 3, 4

रसखान- पद-4, 5

भूषण-(कवित्त)1, 2, 3

इकाई -II कक्षाएँ-15 अंक-20

अयोध्यासिंह उपाध्याय '*हरिऔध*'- कृष्ण - छटा

जयशंकर प्रसाद - आँसू

महादेवी वर्मा - मेरे दीपक

रामधारी सिंह 'दिनकर'- हिमालय के प्रति

हरिवंश राय 'बच्चन'- नीड़ का निर्माण

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'- नदी के द्वीप

इकाई-III पाठ्यपुस्तक- **काव्यांग कौमुदी- सं. कन्हैया सिंह** कक्षाएँ-15; अंक-20

विविध सम्प्रदायों का सामान्य परिचय – ध्वनि; रस; अलंकार; वक्रोक्ति; रीति; औचित्य

इकाई-IV पाठ्यपुस्तक- **काव्यांग कौमुदी- सं. कन्हैया सिंह** कक्षाएँ-15; अंक-20

अलंकार का स्वरूप एवं भेद

निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय-

शब्दालंकार –अनुप्रास , यमक

अर्थालंकार- उपमा, रूपक

उभयालंकार- संकर, संसृष्टि

छंद का स्वरूप एवं भेद

निम्नलिखित छंदों का सोदाहरण परिचय-

वार्णिक छन्द – सवैया, मन्द्राकांता, कवित्त

मात्रिक छन्द – रोला, दोहा, सोरठ

Detailed Syllabus for Generic Elective Courses
Sub : Hindi

SEMESTER-IV

COURSE TITLE : प्रयोजनमूलक हिन्दी

COURSE CODE: HING-401 **COURSE NO: DSE-04**

CREDITS: 06 **NO. OF CLASSES: 60**

Total MARKS: 100 **END SEMESTER: 80** **INTERNAL ASSESSMENTS: 20**

साहित्य भाषा को प्रतिष्ठा दे सकता है लेकिन विस्तार नहीं। भाषा को विस्तार देता है उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप। प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी को वैश्विक प्रसार मिला है। हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी हिन्दी को समझने और बोलने वाले मिल जाते हैं। हिन्दी का विकास आज राजकीय माध्यमों के द्वारा नहीं बल्कि दूसरे माध्यमों से हो रहा है, जिनमें चलचित्र, दूरदर्शन उद्योग और व्यापार का योगदान अधिक है। आज हिन्दी के प्रयोजनमूलक संदर्भों से जो क्षेत्र जुड़े हुए हैं उसका ज्ञान अर्जित करने हेतु प्रयोजनपरक हिन्दी को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई-I कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रयोजनमूलक हिन्दी: अवधारणा, स्वरूप, विशेषताएँ, सीमाएँ एवं उपयोगिता

हिन्दी भाषा के विविध रूप: बोलचाल की हिन्दी, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा

हिन्दी की शैलियाँ: हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी

संविधान में हिन्दी

इकाई -II कक्षाएँ-15; अंक-20

हिन्दी के प्रयोग क्षेत्र : भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना एवं भाषा प्रयुक्ति के प्रकार- वार्त्ता क्षेत्र, वार्त्ता शैली एवं वार्त्ता प्रकार

इकाई-III कक्षाएँ-15; अंक-20

प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार: कार्यालयी हिन्दी, व्यावसायिक हिन्दी

इकाई-IV कक्षाएँ-15; अंक-20

पत्रः स्वरूप, प्रकार एवं प्रयोग

व्यावसायिक पत्राचारः स्वरूप एवं प्रयोग

पत्र-लेखन व्यवहार: टिप्पणी तथा मसौदा-लेखन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>-

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी - दंगल झाल्टे
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका- कैलाशनाथ पाण्डेय; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव

5. प्रसाशनिक हिन्दी - पूरनचन्द टण्डन
6. प्रसाशनिक हिन्दी - कैलाशचन्द्र भाटिया

Detailed Syllabus for Skill Enhancement Course
Sub: Hindi

SEMESTER-III

COURSE TITLE: भाषा-कौशल
COURSE CODE: HINS-301 **COURSE NO: SEC-01**
CREDITS: 02 **NO. OF CLASSES: 24**
Total MARKS: 50 **END SEMESTER:40** **INTERNAL ASSESSMENTS: 10**

भाषा दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण का माध्यम है। पर जब संप्रेषण में कुशलता देखने को मिलती है तो श्रोता पर उसका प्रभाव अद्वितीय होता है। इसीलिए भाषा-कौशल की विशेष महत्ता है। इस पत्र में भाषा के स्वरूप, विशेषता एवं विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति जब भाषा का प्रयोग करता है तो उसे लिखित और वाचिक जैसे कौशलों का सामना करना पड़ता है।उक्त बातों को ध्यान में रखकर ही इस पाठ्यक्रम को प्रमुखता प्रदान की गयी है।

इकाई- I कक्षाएँ - 6 अंक- 10

भाषा : अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं महत्व

भाषा : रूप, भेद एवं लक्षण/विशेषताएँ/प्रवृत्तियाँ

इकाई- II कक्षाएँ - 9 अंक- 15

वाचन/संवाद/संप्रेषण/मौखिक-कौशल:

- संवाद-लेखन
- वार्तालाप
- भाषण
- अभ्यास

इकाई-III कक्षाएँ - 9 अंक-15

लेखन-कौशल :

- सार-लेखन/संक्षेपण
- पल्लवन/ निबंध-लेखन
- पत्र-लेखन

* अभ्यास

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना – डॉ. अर्जुन तिवारी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी।
2. हिन्दी व्याकरण और रचना - डॉ. वासुदेव नन्दन पाण्डेय, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी।

Detailed Syllabus for Skill Enhancement Course
Sub: Hindi

COURSE TITLE: अनुवाद-कौशल
COURSE CODE: HINS-401 **COURSE NO: SEC-02**
CREDITS: 02 **NO. OF CLASSES: 24**
Total MARKS: 50 END SEMESTER:40 **INTERNAL ASSESSMENTS: 10**

अनुवाद विज्ञान के साथ-साथ एक कला भी है। जब दो भाषा भाषी मिलते हैं, तो वे एक-दूसरे की भाषा को समझ नहीं पाते , तब जाकर अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है। वहाँ तो अनुवादक से काम चल जाता है। पर अनुवाद की भाषिक संरचना और उसके कौशल अनुवादक जानता है तो उसे केवल वार्तालाप ही नहीं, पर साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में और कई कौशलगत बारीकियों को जानने की आवश्यकता होती है जिसे ध्यान में रखकर इस पत्र को कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई- I कक्षाएँ - 9 अंक- 15

अनुवाद का तात्पर्य
अनुवाद के क्षेत्र- कार्यालयी, साहित्यिक, वाणिज्यिक, ज्ञान-विज्ञानपरक, विधिक
अनुवाद की प्रक्रिया
अनुवाद के प्रकार - भावानुवाद/छायानुवाद, आशु अनुवाद, डबिंग, कम्प्यूटर अनुवाद

इकाई- II कक्षाएँ - 9 अंक- 15

अनुवादक के गुण, अनुवाद की महत्ता/उपयोगिता
विशिष्ट पदनाम/ पारिभाषिक शब्दावली

इकाई-III कक्षाएँ - 6 अंक-10

अनुवाद के शिक्षण और अभ्यास (अंग्रेजी से हिन्दी अथवा हिन्दी से अंग्रेजी)

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. अनुवाद विज्ञान, भोलानाथ तिवारी. किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली
2. अनुवादः सिद्धांत और प्रविधि-भोलानाथ तिवारी; स.-जयन्तीप्रसाद नौटियाल किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. कैलाश चंद भाटिया
4. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. अनुवाद के विविध आयाम – डॉ. पूरनचन्द टंडन
6. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा – डॉ. सूरज कुमार
7. अनुवाद के सिद्धान्त – आर. आर. रेड्डी, अनुवादक – जे एल रेड्डी